प्रभा खेतान के साहित्य में नारी चेतना

हिन्दी में पीएच.डी उपाधि हेतु
शोध प्रस्तावना

शोध निर्देशक
JV'n डॉ. निरूपमा हर्षवर्धन

शोधार्थी
JV'n सुमनलता
(JV-D/11/1029)

मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग
प्रबंधन एवं मानविकी संकाय
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर, भारत
मई, 2011

प्रपत्र शोध कार्य

(1) शोध विषय का परिचय :

स्वतन्त्रता प्राप्ति एवं देश विभाजन की घटनाओं से हमारे समाज में अनेक परिवर्तन आरम्भ हो गए। एक और देश विकास के पथ पर अग्रसर होने लगा तो दूसरी ओर जीवन मूल्यों में विघटन प्रारम्भ हो गया। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व देशवासियों ने जो सपने संजोए थे उन्हें वे अब तुरन्त पूरा करना चाहते थे पर समय व्यतीत होने के साथ ही लोगों के सपने टूटने लगे और 1960 तक पहुंचते–पहुंचते लोग मोह भंग की स्थिति में पहुंच गए। साठोतर काल में नारी की स्थिति में भी बहुत परिवर्तन आ गया। शिक्षा, नौकरी एवं पाश्चात्य प्रभाव के कारण वह प्रारम्भिक भारतीय नारी से बहुत दूर हो गई। संयुक्त परिवार का स्थान एकल परिवार ने ले लिया। कृत्रिमता एवं विलासिता के कारण नैतिक मूल्यों में गिरावट आ गई। सेवा व त्याग की भावना का पतन हो गया। संयुक्त परिवार में घुटन अनुभव करने वाले पति–पत्नी एकल परिवार में भी सुख से नहीं रह पाए। साहित्यकार आम आदमी की तरह ही एक सामाजिक प्राणी होता है। परन्तु वह आम आदमी की अपेक्षा अधिक संवेदनशील, कल्पनाशील एवं चिन्तनशील होता है। फलतः समसामयिक परिवेश और घटनाक्रम से वह न केवल प्रभावित होता है बल्कि उसका बहुविध मूल्यांकन करता है और अपनी सोच के अनुसार अपनी राय भी प्रस्तुत करता है। वह अपने उज्ज्वल अतीत से प्रेरणा लेकर वर्तमान को ध्वनित करते हुए भविष्य के लिए मार्ग भी प्रशस्त करता है। इस कारण साहित्यकार को न केवल स्वप्न–दृष्टा अपितु भविष्य दृष्टा भी कहा जाता है।

स्वतंत्रता के बाद साहित्यकारों नें वृहत से लघु की ओर देखने की वैज्ञानिक दृष्टि को अपनाया और छोटे–छोटे मनोभावों को अपने साहित्य में आधार बनाया। स्वतन्त्रोतर कथाकारों ने नारी चेतना को अपने साहित्य को अपना विषय बनाया। स्वतन्त्रता के बाद विशेषकर साठोतर काल में हमारे देश में शिक्षा का जो प्रचार–प्रसार हुआ उससे नारी चेतना की तीव्र गति से विकसित हुई और नारी पति, बच्चों एवं घर से उपर उठकर जीवन के सभी क्षेत्रों में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक अपना स्थान बनाने में सफल हो गई। जिससे नारी की स्थिति में बहुत परिवर्तन हो गया। वह पुरूष को पछाड़कर उससे आगे बढ़ गई। नारी चेतना से आए इस परिवर्तन को जहॉ पुरूष कथाकारों ने उकेरा है वहीं शिवानी, अमृता प्रीतम, ऊषा प्रियमवंदा, मनु भंडारी, कृष्णा शोभती एवं प्रभा खेतान आदि महिला लेखिकाओं ने भी अनेक रचनाएँ प्रस्तुत की है। इस क्षेत्र में प्रभा खेतान ने जो साहित्य प्रस्तुत किया है उसका नारी चेतना की दृष्टि से आलोचनात्मक अध्ययन नहीं हो पाया है। इसी आभाव को देखकर मैनें प्रभा खेतान के साहित्य में नारी चेतना विषय को अपने शोध का आधार बनाया है।

(2) शोध का उद्देश्य :

शिक्षा एवं स्वतन्त्रता के अभाव के कारण स्वतन्त्रता से पूर्व हमारे देश में नारी की स्थिति बड़ी दयनीय रही है। इसलिए राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका नगण्य रही है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश की स्थिति में जो परिवर्तन हुआ है। उसका प्रभाव नारी वर्ग पर भी पडा है। शिक्षा के प्रचार–प्रसार के कारण नारी जीवन के सभी क्षेत्रों में सक्रिय दिखाई देने लगी। यद्यपि प्रारम्भ में इनकी मात्रा कम ही रही है। सन् 1960 के बाद महिलाओं ने अपनी चेतना शक्ति एवं योग्यता के कारण यह

प्रमाणित करना प्रारम्भ कर दिया कि स्त्रियां पुरूषों से किसी भी रूप में कम नहीं है। नारी की इसी चेतना, शक्ति एवं योग्यता को साठोतरी काल के कथाकारों ने अपना विषय बनाया व नारी चेतना से संबंधित अनेक रचनाओं की रचना की जिनमें महिलाओं कथाकारों का भी योगदान रहा।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा प्रकट किया जा सकता है।

1. नारी वर्ग को नारी चेतना की जानकारी देना।
2. नारी वर्ग को नारी विकास से अवगत करना।
3. नारी वर्ग को नारी उत्थान के लिए प्रेरित करना।
4. महिलाओं में नव चेतना का विकास करना।
5. पाठकों को प्रभा खेतान के साहित्य की उपलब्धियों की जानकारी देना।
6. नारी वर्ग को नारी उत्पीड़न एवं शोषण से मुक्त कराना।
7. नारी जगत में आत्मनिर्भता की भावना का विकास करना।
8. नारी को पुरूष की सच्ची सहयोगिनी बनाना।
9. महिलाओं में शिक्षा का प्रचार–प्रसार करना एवं भ्रूण हत्या जैसी कुरीति को समाप्त करना।

(3) उपलब्ध साहित्य की समीक्षा :

आधुनिक काल विशेषकर साठोतर काल में नारी चेतना एक चर्चित विषय रहा है और इस विषय को लेकर हिन्दी के अनेक कथाकारों ने अपनी रचनाएं प्रस्तुत करके नारी समाज में एक नई चेतना फूंकी है पर नारी चेतना से संबंधित कथा साहित्य पर शोध कार्य का अभाव रहा। इसी अभाव को दूर करने के उद्देश्य से तथा नारी चेतना के विभिन्न पहलुओं को समाज के सामने लाने के उद्देश्य से मैनें इस विषय का चयन किया है। यद्यपि हिन्दी साहित्य में नारी चित्रण या नारी पात्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण आदि विषयों पर तो शोध कार्य हुआ है। बिन्दु अग्रवाल का आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी चित्रण तथा विमल सहस्त्र बुदे का हिन्दी उपन्यासों में नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण आदि शोध प्रबन्ध इसी तरह के हैं। पर इनमें से नारी चेतना विशेषकर प्रभा खेतान के साहित्य में नारी चेतना से संबंधित कोई शोध प्रबन्ध नहीं हुआ। यद्यपि नारी चेतना से संबंधित निबन्ध तो समय समय पर विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। जिनका उद्देश्य नारी चेतना को गति प्रदान करना है।

आज समाज में शिक्षा के इतने प्रचार–प्रसार के बाद भी नारी शोषण एवं उत्पीड़न कम नहीं हो पा रहा है। ऐसे में इस विषय का महत्व और बढ़ जाता है। समाज में नारी चेतना की भावना जितनी तीव्र होगी उतना ही नारी का विकास अधिक होगा। आज नारी जिस उत्साह से नारी शोषण एवं उत्पीड़न की समाप्ति के लिए संघर्षरत है या इस प्रतियोगिता के युग में आगे बढ़ने के लिए प्रयासरत है। ऐसे में प्रस्तुत विषय नारी जगत में एक नई चेतना का संचार कर सकता है। इस दृष्टि से प्रस्तुत विषय पूर्ण मौलिक है जिस पर अब तक किसी शोधकर्ता का ध्यान नहीं गया है।

(4) शोध की विधि :

सर्वप्रथम प्रभा खेतान के साहित्य को संग्रह करने का प्रयास किया जायेगा। जिससे प्रभा खेतान की विचारधारा को समझा जा सके। इसके साथ–साथ साठोतर काल के साहित्य में नारी चेतना से संबंधित आलोचनात्मक ग्रंथों विशेषकर प्रभा खेतान के साहित्य का अध्ययन करने नारी चेतना के विभिन्न पहलुओं को समझकर समाज को जानकारी देने का प्रयास किया जायेगा। इसके लिए प्रभा खेतान से संबंधित लोगों से पत्र व्यवहार विधि एवं साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया जायेगा। नारी चेतना के उद्देश्य से प्रभा खेतान के साहित्य का सूक्ष्म अध्यन करके विषय का विशलेषण एवं शोध विषय के निष्कर्ष को प्रस्तुत किया जायेगा प्रभा खेतान के साहित्य का अध्ययन और उसे अध्ययन से प्राप्त नारी चेतना के निष्कर्ष इस शोध विषय के प्रमुख आधार रहेंगे।

संदर्भ ग्रंथ

1. पीली आँधी : राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2001।
2. आओ पेपे घर चले : सरस्वती विहार, नई दिल्ली, 1990।
3. ताला बन्दी : सरस्वती विहार, नई दिल्ली, 1991।
4. छिन्नमस्त : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993।
5. अपने–अपने चेहरे : किताब घर 1996।
6. स्त्री पक्ष : जनसत्ता सबरंग 1999।
7. अग्नि सम्भवा : मासिक पत्रिका हंस, मई 1992।
8. शब्दों का मसींहा : सार्त्र सरस्वती विहार, नई दिल्ली, 1985।
9. सार्त्र का अस्तित्ववाद : सरस्वती विहार, नई दिल्ली, 1984।
10. बाजार के बीच बाजार के खिलाफ : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2004।
11. उपनिवेश में स्त्री : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003।
12. अपरिचित ऊजाले : अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली 1981।
13. सीढ़ियां चढ़ती हुई मैं : इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, नई दिल्ली 1982।
14. एक और आकाश की खोज में : अप्रस्तुत प्रकाशन, कलकत्ता 1985।
15. कृष्णधर्मा मैं : स्वर समवेत प्रकाशन, कलकत्ता, 1985।

16. हुस्नबानों और अन्य कविताऐं : स्वर समवेत प्रकाशन, कलकत्ता, 1987।

17. अहल्या : सरस्वती विहार, नई दिल्ली, 1988।

18. सांकलो में कैद क्षितिज : कुछ दक्षिण अफ्रीकी कविताऐं, सरस्वती विहार, नई दिल्ली 1988।

19. अन्य से अनन्या : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2008।

20. स्त्री उपेक्षिता : पोकेट बुक्स दिल्ली, 1990।

आधार ग्रंथ

1. आशा रानी व्होरा भारतीय नारी : दशा और दिशा, नेशनल पब्लिशर्स

2. श्री के.एम. कपाड़िया भारत वर्ष में विवाह और परिवार, नवयुग पब्लिशर्स

3. डॉ. गीता लाल प्रेमचन्द का नारी चित्रण हिन्दी साहित्य संसार पब्लिशिंग हाउस

4. श्री चिरंजीलाल पाराशर नारी और समाज, नेशनल पब्लिशर्स

5. निर्मला जैन, नित्यानंद तिवारी हिन्दी उपन्यास 1950 के बाद, नेशनल पब्लिशिंग हाउस

6. नीरा देसाई भारतीय समाज में नारी, नेशनल बुक ट्रस्ट

7. डॉ. सुदेश बत्रा नारी अस्मिता हिन्दी उपन्यासों में, रचना प्रकाशन

8. शीला राजवार हिन्दी कथा साहित्य में नारी के बदलते संदर्भ, ईस्टर्न बुक्स

9. डॉ. सुशील वर्मा आधुनिक समाज की नारी चेतना, हिन्दी बुक सैन्टर

10. डॉ. बिन्दु अग्रवाल हिन्दी उपन्यासों में नारी चित्रण, राधा कृष्ण प्रकाशन

11. प्रमिला कपूर भारत में विवाह एवं काम काजी महिलाएँ, हिमालयन पब्लिशिंग हाउस

12. आशा रानी व्होरा स्त्री सरोकार, आर्य प्रकाशन मण्डल

13. आशा रानी व्होरा नारी विद्रोह के भारतीय मंच, प्रतिभा प्रतिष्ठान, प्रवीण प्रकाशन

14. चित्रा मुदगल एक ब्यार उनकी मुट्ठी मे, कल्याणी शिक्षा परिषद

15. नीता रतनेश भगवती चरण वर्मा के उपन्यासों में नारीपात्र, लोकभारती प्रकाशन

16. नीलम राठी साठोतर हिन्दी नाटक, इण्डियन पब्लिशर्स हाउस

17. परमानन्द श्रीवास्तव उपन्यास का यथार्थ और रचनात्मक भाषा, जवाहर बुक सैन्टर

18. पुरूषोतम दूबे व्यक्ति चेतना और स्वातन्त्रयोतर हिन्दी उपन्यास, इण्डियन एक्सप्रेस

19. बचन सिंह आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन

20. बसंती हिन्दी उपन्यास रचना विधान और युगबोध, राजकमल प्रकाशन

21. राकेश द्विवेदी महिला शक्तिकरण : चुनौतियॉ एवं राजनीतियां, दया पब्लिशिंग हाउस

22. रामदरश मिश्र हिन्दी उपन्यास : एक अर्न्तयात्रा, राजकमल प्रकाशन

23. विम सहस्त्र दूबे हिन्दी उपन्यासों में नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, ज्योति इन्टरप्राईजैज

24. विवेक द्विवेदी भीष्म साहनी – उपन्यास साहित्य, वाणी प्रकाशन

25. शशि गुप्तप्रेमचंदोतर हिन्दी उपन्यास : नए नैतिक मूल्य, राधा पब्लिकेशन

26. शोभा पालीवाल अमृतलाल नागर के उपन्यासों में सामाजिक चेतना, राजपाल एण्ड संस

पत्र पत्रिकाएँ

1– समकालीन भारतीय साहित्य

2– हंस

3– भाषा

4– जनसत्ता

5– सहारा समय

6– आउटलुक पत्रिका

7– दैनिक जागरण

8– कथादेश

9– आजकल

10– धर्मयुग

11– कादम्बिनी

12– मधुमती

13– दैनिक भास्कर

हस्ताक्षर शोध निर्देशिका हस्ताक्षर शोधार्थी